Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049 4176

कृष्णापरिणयं महाकाव्य में द्रौपदी की प्रासंगिकता (आधुनिक परिप्रेक्ष्य में)

डॉ0 दीपिका वर्मा
शोध निर्देशिका, संस्कृत विभाग, आई॰ ओ॰ पी॰ वृन्दावन, मथुरा, डॉ॰ भीमराव आंबेड़कर विश्वविद्यालय, आगरा।
गीता
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, आई॰ ओ॰ पी॰ वृन्दावन, मथुरा, डॉ॰ भीमराव आंबेड़कर विश्वविद्यालय, आगरा

भूमिकाः–

संस्कृत साहित्य में प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय तक अनेक महाकाव्य समय–समय पर लिखे जाते है। जिनका संस्कृत साहित्य को समृद्ध बनाने मे महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। संस्कृत साहित्य में कृष्णापरिणयं महाकाव्य भी भारतीय संस्कृति की पुष्टि करता है। संस्कृत साहित्य में प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान बताया गया हैं। उसमें द्रौपदी भी एक नारी–पात्र है। पुरूष प्रधान समाज ने सदा ही उसे अपनी अर्द्धांगिनी बनाकर दबाने की कोशिश की है। संस्कृत साहित्य में प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय तक पुरूष मर्यादा से नारी मर्यादा सदा ही उत्कृष्ट मानी गयी है। रामायण, महाभारत इत्यादि अनेक महाकाव्यों मे भारतीय ऐतिहासिक ग्रन्थों तथा पुराणों मे पतिव्रत्य के प्रभाव से त्रिकालदर्शी सिद्धि सम्पन्न अनेक महान् नारियों के उदाहरण देखने को मिलते है, यथा– सती सावित्री, सीता, अनूसूया, सुलभा, अरून्धती, गार्गी, मैत्रयी, भारती, द्रौपदी, गान्धारी, अपाला, घोषा इत्यादि। इसके अतिरिक्त नारियों के प्रति सम्मान की बाते भी हमारे संस्कृत साहित्य में बताई गई है यथा–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रिया।।[1]

अर्थात जिस कुल मे नारियों की पूजा अर्थात् सत्कार होता है, उस कुल में दिव्यगुण, दिव्य भोग तथा उत्तम संतान होती है। अर्थात् वहाँ देवता निवास करते है। जिस कुल में स्त्रियों की पूजा नही होती, वहाँ पर सभी कार्य निष्फल होते है।

मुख्य शब्दः कृष्णापरिणय, स्वाभिमानी, महाकाव्य, स्वाधीन, प्राचीनकाल, शास्त्र प्रमाणिक

इतिहास साक्षी है कि जब–जब स्त्री का अपमान हुआ है तब–तब महासंग्राम हुए। राम–रावण युद्ध हो या महाभारत। 'कृष्णापरिणयं' महाकाव्य की पात्र द्रौपदी भी इस जगत से पृथक् नहीं है, उनका जीवन भी सामान्य मनुष्य के जीवन से भिन्न नही है। 'कृष्णापरिणयं' महाकाव्य की नायिका द्रौपदी तथा नायक अर्जुन है। कवि जयनारायणयात्री ने नारी के जिन आदर्श गुणों

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049 4176

का चित्रण इस महाकाव्य में किया है, उनसे समाज आज भी प्रेरणा ग्रहण कर रहा है। द्रौपदी के चरित्र में मुख्य रूप से पतिव्रत्य धर्म, धार्मिक, स्वाभिमानी, आज्ञाकारी, तपस्वी, ईश्वर के प्रति अटूट आस्था रखने वाली, रूपवती इत्यादि प्रमुख गुण होने के साथ–साथ कतिपय नारी सुलभ दुर्बलताएँ भी परिलक्षित होती है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में द्रौपदी की प्रासंगिकता इस महाकाव्य के आधार पर निम्नलिखित रूप से उल्लेखित की जा सकती है।

सामाजिक स्थिति के सन्दर्भ में:–

द्रौपदी का विवाह अर्जुन से होता है, किन्तु माता कुन्ती की अज्ञानतावश दिये गए आदेशानुसार द्रौपदी को पांचों पाण्डवों की पत्नी बनना पड़ता है।[2] यह हमारे समाज में उस समय प्रचलित बहुपतित्व प्रथा को दर्शाता है। जब द्रौपदी जैसी नारी जो एक सम्पन्न परिवार से थी और एक राजा की पुत्री होकर भी इस प्रथा के विरूद्ध आवाज नही उठा पायी तो सामान्य नारियों की स्थिति तो इससे भी अधिक भयावह रही होगी। इस महाकाव्य के आधार पर हम विचार कर सकते है। ऐसी विषम परिस्थिति में भी द्रौपदी अपने पाँचों पतियों से एकनिष्ठ प्रेम स्थापित कर सकती है। इस महाकाव्य के आधार पर द्रौपदी के चरित्र में मर्यादा भी देखने को मिलती है कि वह एक समय में एक पति के साथ रहती थी, चाहे उसका विवाह किन्ही कारणों से पाँचों पाण्डवों से हुआ हो। अगर आधुनिक युग की नारी होती तो उसमें यह गुण शायद नही होता, क्योंकि आज की नारी तो एक पुरूष का सम्मान भी नही कर पाती है। इन सबका कारण सामाजिक आधार पर देखें तो आत्म संतुष्टि ही है। जब तक एक नारी में आत्म संतुष्टि नही होगी व अपने पति का न तो सम्मान करेगी न ही उसको प्राप्त करके अपने आपको धन्य मानेगी। इससे विपरीत कुछ क्षेत्रों में नारी स्वतंत्र थी जो आधुनिक युग में भी नारियों में यह गुण देखा जाता है। प्राचीनकाल में स्वयंवर सभा में उपस्थित कर्ण जब लक्ष्यभेद के लिए आगे बढ़ता है तो भरी सभा में द्रौपदी उच्च स्वर में कहती है कि–

यावत् तदा व्रजतिताव दुवाच कृष्णा
सूतात्मजोऽस्ति वरितास्मि कदापि नैतम्
कामं स्वयंवरपणं परिपूरयेत
कर्णो निशम्य जगृहेपुन रासन सः।[3]

अर्थात् तव ज्योहिं वह कर्ण जाता है त्योहिं कृष्णा (द्रौपदी) बोली यह सूत सारथि का लड़का है इसको मै कभी नही वरूंगी। चाहे यह स्वयंवर की शर्त पूरी कर दे। यह सुनकर उस कर्ण ने फिर आसन ग्रहण कर लिया। इस प्रकार द्रौपदी उपर्युक्त प्रसंग में निर्भिक एवं साहसी नारी के रूप में प्रशंसनीय है। आधुनिक सन्दर्भ में भी विवाह संबंधी निर्णय लेने में नारी कुछ अर्थो में पराधीन है तो कुछ अर्थो में स्वाधीन है तथापि आधुनिक युग में परिवर्तन हुआ है। विवाह सम्बन्ध निर्णयों में नारियाँ स्वतंत्र है। आज के समय में जब भी किसी कन्या के विवाह

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049 4176

की बात चलती है तो माता–पिता चाहे गरीब हो या अमीर सभी अपनी कन्या से पूछते है कि लड़का पसन्द है या नहीं। अपनी कन्या से उसके परिवार व लड़के की नौकरी इत्यादि के बारे में सब बाते बताते है, क्योंकि लड़के के साथ रहना लड़की को है, न कि उसके माता–पिता को। जब उनकी कन्या की सहमति होती है तभी समाज में रीति–रिवाज से विवाह इत्यादि कार्य किए जाते है। क्योंकि सभी माता–पिता अपनी कन्या के लिए अच्छा वर ही चाहते है। 'कृष्णापरिणयं' महाकाव्य में भी द्रौपदी के माता–पिता की यही इच्छा थी। यथा–

क्रूरंधनु र्नमयितुं चय दर्जुनः स
शक्नोति नापरनरः स्वबलेन कश्चित्
तस्यात्मजापरिणयः स समीहतेस्म
स्यात् फाल्गुणेनसह वीरवरेण चित्ते।।[4]

अर्थात् राजा ने ऐसा कठोर धनुष करवाया जिसको वह अर्जुन अपने बल से झुका सकता है तथा कोई दूसरा मनुष्य अपने बल से नहीं झुका सकता है। वह राजा मन में चाहता था कि उसकी कन्या का विवाह श्रेष्ठ अर्जुन के साथ हो।

पारिवारिक सम्बन्धों के सन्दर्भ में:–

'कृष्णापरिणयं' महाकाव्य में जिन पारिवारिक सम्बन्धों को दर्शाया है वह प्राचीन समय से लेकर वर्तमान युग मे भी उपयोगी है। जिस तरह द्रौपदी का विवाहोपरान्त का जीवन कटु अनुभवों से व्याप्त है, तथापि पाण्डवों की पत्नी बनने के पश्चात् वह आदर्श गृहिणी का निर्वहण भली–भांति करती है। प्रथम दिन से ही पाण्डवों के साथ कुम्हार के घर मे रहनें लगती है।[5] अपने पिता के गृह में अनेक दास–दासियाँ उनकी सेवा में तत्पर रहती थी। विवाह के पश्चात् राजसी वैभव का जीवन एक स्वप्न बन जाता है। कृष्णापरिणयं महाकाव्य में द्रौपदी के चरित्र में आदर्श पतिव्रता नारी के सभी गुण दिखाई देते है। पतिव्रत धर्म के सामने द्रौपदी ने सभी विकल्पों को त्याग दिया। इस महाकाव्य में द्रौपदी में स्वाभिमान तथा बड़ों की आज्ञा का पालन करने का गुण देखने को मिलता है। जब माता कुन्ती सभी पाण्डवों को भिक्षा के रूप में आपस में बाँटने को कहती है तो वह अपनी माता मानकर उनकी आज्ञा का पालन बिना विरोध के करती है। यथा–

नेक्षित्वेयं निगदति पृथा गेहमध्याद् मिलित्वा
पञ्चैवेमां बहुलसुषमां भुक्तं हार्देन भिक्षाम्
यावद् वीक्ष्य प्रचुररूचिरा मेत्य गेहाद्बहिःसा।
जाता कुन्ती मुदितहृदया चन्द्रवक्त्रां नवोढाम्।[6]

अर्थात् यह कुन्ती बिना देखे घर के अन्दर से कहती है बहुत सुन्दर भिक्षा को तुम पाँचों ही मिलकर प्रेम से खा लो ज्योहिं घर से बाहर आकर बहुत सुन्दर चन्द्रमा से मुख वाली नई

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049 4176

विवाहिता को देखकर कुन्ती प्रसन्न मन वाली हो गई। आधुनिक नारी के सन्दर्भ में देखे तो वह अनुचित बात का समर्थन नहीं करेंगी, तुरंत आवाज उठा देंगी। क्योंकि आधुनिक समाज भी एक पति के साथ विवाह की अनुमति उचित मानी जाती है। अगर कोई नारी वर्तमान युग में पाँच पतियों से विवाह करती है तो हमारा समाज उसे वैश्या आदि की उपाधि देने लगता है। लेकिन द्रौपदी सामान्य नारी न होकर एक दिव्य नारी थी। एक तो वह योनि से उत्पन्न ने होकर यज्ञ से उत्पन्न हुई थी। वह याज्ञसेनी अर्थात् काली की अवतार मानी गई है। वैसे भी हमारे शास्त्र प्रमाणिक है। क्योंकि जब हवन–यज्ञ इत्यादि के वैदिक कार्य किए जाते है तो सब जगह पवित्रता आ जाती है अर्थात् सभी कार्य शुद्ध हो जाते है। द्रौपदी तो अद्वितीय नारी थी जो जन्म–से ही पवित्र थी। उसे किसी भी शुद्धिकरण की आवश्यकता नहीं थी। द्रौपदी में स्वाभिमान का गुण भी देखने को मिलता है जो आधुनिक नारियों में कई बार महान विदूषी होने पर भी दिखाई नहीं देता। आधुनिक युग में नारियाँ अपने स्वाभिमान को त्यागकर अपना विवाह बचाने के लिए समझौता किंचित कारणो से कर लेती है जो बाद मे उनके विनाश का कारण बन जाता है। अतः कृष्णापरिणयं महाकाव्य में द्रौपदी द्वारा कही गयी बातें आज भी सुखी वैवाहिक जीवन के लिए उपादेय है। शास्त्रों मे स्त्रियों के लिए जिन कर्त्तव्यों का उपदेश दिया गया है उन सबका द्रौपदी नियमपूर्वक पालन इस महाकाव्य में करती दिखाई देती है। द्रौपदी द्वारा कहीं गई उपर्युक्त बातें आज के युग में भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी प्राचीन काल में थी।

धार्मिक सम्बन्धों के सम्बन्ध में:–

'कृष्णपरिणयं' महाकाव्य में द्रौपदी को एक धार्मिक नारी के रूप में दिखाया गया है। द्रौपदी दूसरे जन्म में एक मुनि की कन्या थी। जब उस कन्या ने संसार में अपने योग्य पति नहीं प्राप्त हुआ तो उस साध्वी ने धार्मिक कार्य करने आरम्भ कर दिए। यथा–

लीना जाता महति तपसि प्रेमभावेन साध्वी
शम्भुं शम्भुं भजति मनसा सर्वकार्यं विहाय
स्वेदस्नाता भवति दिवसे ग्रीष्मतीव्रातपेन
वृक्षाणांसा शमयति दलैः प्रत्यहं स्वोदराग्नीम्।।[7]

वह सभी कार्य छोड़कर अपने मन से शिवजी की भक्ति करने लग जाती है। वह दिन–रात, सर्दी–गर्मी की परवाह नही करती है। जब वह तप जैसे कार्य करती है तो वहाँ वर्षा ऋतु में काले, पीले तथा सफेद सांप घूमते है। कभी तो तपस्वी के शरीर पर भी चढ़ जाते है। लेकिन वह तप करती हुई थोड़ी सी भी भयभीत नहीं होती है।[8] ये सभी क्रियाएँ द्रौपदी की धार्मिक प्रवृत्ति को दर्शाती है। आधुनिक युग में भी अनेक कन्याएँ सुन्दर वर को प्राप्त करने के लिए शिव देवता के व्रत इत्यादि कार्य करती है। प्राचीन समय में भी द्रौपदी ने अच्छे वर को प्राप्त

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049 4176

करने के लिए ये सभी कार्य किए थे, जो वर्तमान समय में प्रासंगिक बताए गए है। अतः द्रौपदी के माध्यम से आधुनिक नारियों की धार्मिक क्रियाओं में रूचि इत्यादि को बताया गया है।

निष्कर्षः– अतः हम निष्कर्ष में कह सकते है कि द्रौपदी का चरित्र सम्पूर्ण गुणों से परिपूर्ण एक ऐसी नारी का चरित्र है, जो जटिल एंव विसंगतियों से पूर्ण आधुनिक युग में भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है। द्रौपदी में आदर्श पतिव्रता नारी, धैर्यशीलता, बुद्धिमती, स्वाभिमानी, आज्ञाकारी द्रौपदी के अवगुणों को त्यागकर उसके गुणों को अपने साथ–साथ अपने परिवार तथा समाज को भी सुखमय मार्ग पर अग्रसर कर सकती है, क्योंकि एक परिवार की नींव एक नारी ही होती है। जिस प्रकार मकान की नीवं मजबुत होगी तो वह ज्यादा दिन तक चलेगा उसी प्रकार एक परिवार की नींव अर्थात् नारी मजबुत इरादे वाली तथा महान् विदूषी अर्थात् शिक्षित एवम् सर्वगुण सम्पन्न होगी तो वह अपने परिवार को स्वर्ग बना देगी। अतः हम इस महाकाव्य के माध्यम से कह सकते है कि आधुनिक युग मे नारी किसी कुल को आगे बढ़ा सकती है तो उसके विनाश का कारण भी बन सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. मनुस्मृति, 3/46
2. कृष्णापरिणयं, 12/3
3. वहीं, 11/48
4. वहीं, 11/15
5. वहीं 12/2
6. वहीं, 12/3
7. वहीं, 12/41
8. वहीं, 12/44